www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सृजन में लगें तो संकट टले

– श्रीराम शर्मा आचार्य

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

SHRI SANDIPBHAI PATEL,
MOHADEL, GUJARAT, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सृजन में लगें तो संकट टलें

संव्याप्त दुःखों के दो ही स्वरूप और कारण हैं-एक पतन, दूसरा पीड़ा। मनःक्षेत्र भ्रान्तियों और विकृतियों से भर जाने का परिणाम चरित्र और व्यवहार में निकृष्टता के बढ़ने के रूप में सामने आता है। यही पतन है। मानवी गरिमा से नीचे उतरा हुआ व्यक्ति मर्यादाओं को तोड़ता और स्वेच्छाचार बरतता है। उसकी प्रतिक्रिया होती है परिस्थितियों की विपन्नता, प्रतिकूलता के रूप में। उपेक्षा, घृणा और विरोध बढ़ने से सहयोग से वंचित रहने वाला मनुष्य न तो सुख-चैन से रह सकता है और न समर्थन के अभाव में कोई कहने लायक प्रगति ही कर सकता है।

भ्रान्तियाँ भटकाती हैं। राज मार्ग छोड़कर झाड़ियों के रास्ते चल पड़ने वाले निर्धारण अपनाने के लिए बहकाती हैं। चिन्तन भ्रष्ट व्यक्ति ऐसे आचरण करता है जिन्हें मूर्खता या धूर्तता कहा जा सके। इस नियति में क्रिया की प्रतिक्रिया का विधान निश्चित है। चिन्तन यदि यथार्थवादी न हो. मान्यताएं-आकांक्षाएं निकृष्ट स्तर की रहने लगें तो स्वभावतः परिस्थितियाँ प्रतिकूल होने लगेंगी। ऐसे ही लोग अनाचार करते या सहते देखे गए हैं। दुश्चिन्तन अपने आप में एक समस्या है। उसके कारण मनःतंत्र बेतरह चरमराने लगता है। प्रगति और शान्ति का सही मार्ग पा सकने में असमर्थ रहने के कारण जो असफलताएं, समस्याएं,कठिनाइयाँ सामने आती हैं उनकी परिणति खीज निराशा, चिन्ता के अतिरिक्त और क्या हो सकती है। ऐसे व्यक्ति कुढ़ते-कुढ़ाते, रोते-रूलाते, व्यथा देते और सहते ही जिन्दगी गुजारते हैं। यह है अनगढ़ विचारणा का कटु प्रतिफल जिसे अधिकांश व्यक्ति चखते और सिर धुनते देखे गये हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इस संसार की दूसरी व्यथा है—पीड़ा। पीड़ा का अर्थ है शरीर गत दुर्बलता और रुग्णता। इनसे ग्रसित व्यक्ति भारभूत होकर जीते हैं। स्वयं कष्ट सहते अनुपयोगी रहते, दूसरों की कृपा पर जीते और सड़े कचरे की तरह अनेकानेक विकृतियाँ उत्पन्न करते हैं। स्वस्थ मन स्वस्थ शरीर में ही रहता है। इस तथ्य को पग-पग पर चरितार्थ होता हुआ देखा जा सकता है। आर्थिक पिछड़ापन, अनीति सहन और मन मसोस कर रहने की आत्महीनता प्रायः उन्हीं को सहनी पड़ती है जो शारीरिक स्वस्थता गँवा बैठे। उपहास और तिरस्कार के भाजन भी वही बनते हैं। अपनी और दूसरों की दृष्टि में भारभूत जीवन जीते और भाग्य को या जिस तिस को कोसते हुए दिन बिताते हैं।

संसार में अभावों, व्यथाओं, समस्याओं, विग्रहों के अनेकानेक स्वरूप हैं। संकटों के नाम—रूप में भिन्नता रहने पर भी वे सभी निकृष्टता और रुग्णता की परिणति ही होते हैं। यदि मानसिक और शारीरिक रूग्णता से बचा-उबरा जा सके तो समझना चाहिए समस्याओं का आत्यंतिक समाधान हस्तगत हो गया और सुसंस्कृत व्यक्ति तथा समुन्नत समाज का सुनिश्चित आधार बन गया।

यों संव्याप्त समस्याओं के अनेकानेक रूप रहने से उनके तात्कालिक उपचार भी कई प्रकार के करने की आवश्यकता पड़ सकती है पर जहाँ तक विष वृक्ष की जड़ काटने का संबंध है कुल्हाड़ी और कलाई का संयोग ही काम देगा। कुल्हाड़ी से मतलब स्वास्थ्य संरक्षण और कलाई से तात्पर्य है शिक्षा संवर्धन। इन दो कार्यों में वैयक्तिक प्रगति और सामूहिक समृद्धि को पूरी तरह अवलम्बित समझा जा सकता है। दूरदर्शियों को शान्ति स्थापना एवं भविष्य निर्धारण की बात गंभीरतपूर्वक सूझे तो उन्हें चिरस्थायी उपाय उपचार के रूप में दो कार्यक्रमों को अपनाकर सृजन एवं समाधान की दिशा में अग्रसर होना चाहिए। यही हैं वे दो आन्दोलन, जिन्हें गति देने के लिए प्रत्येक भावनाशील व विचारशील को आगे आना और जनसाधारण का मार्गदर्शन करना चाहिए।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

नवसृजन की योजना में प्रत्येक युगशिल्पी को इन्हीं दो सामयिक उपचारों को प्रमुखता देनी चाहिए। इन्हीं पर ध्यान केन्द्रित करना और प्रयास प्रक्रिया को उछालना चाहिए। लोकमंगल की, समाज सेवा की संकटों से निपटने की, उज्ज्वल भविष्य के अवतरण की यही सुनिश्चित विधि व्यवस्था है। व्यक्तिसुधरेगा तो समाज समर्थ बनेगा। समुन्नत व्यक्ति ही मिलजुलकर समृद्ध समाज की संरचना करते हैं। अस्तु जन-जन को शिक्षित एवं स्वस्थ बनाने की व्यापक योजना चरितार्थ करने के लिए युग परिवर्तन के पक्षधरों में से प्रत्येक को अविलम्ब जुट पड़ना चाहिए।

साक्षरता की समस्या, आवश्यकता के सन्दर्भ में बहुत कुछ कहा सुना जाता रहा है। अपने देश में ७० प्रतिशत निरक्षर हैं। उन्हें साक्षर बनाये बिना समय की समस्याओं को समझाना और जो करना है उसका महत्व हृदयंगम कराते हुए प्रगतिशील रीति-नीति अपनाने के लिए सहमत करना कठिन है। यह कार्य वर्तमान परिस्थितियों में सरकार के लिए कर सकना कठिन है। इसके लिए जन आन्दोलन उठना चाहिए। प्रौढ़ शिक्षाकी पाठशालाएँ हर गली-मुहल्ले में चलनी चाहिए। शिक्षित लोग विद्याऋण चुकाने के लिए अध्यापन कार्य के लिए समयदान नियोजित करें। उत्साही लोग प्रौढ़ पुरुषों को रात्रि के समय और महिलाओं को तीसरे प्रहर चलने वाली उन पाठशालाओं में सम्मिलित होने की प्रेरणा दें। इस प्रकार लोकमंगल के इस महत्व पूर्ण कार्य को सेवा साधना और प्रगति योजना के आधार पर जनसहयोग से चलाया जा सकता है। समय रहते निरक्षरता की समस्या से निपटने और साक्षरता के सहारे युग समस्याओं के स्वरूप, समाधान से अवगत कराने का कार्य सहज ही आगे बढ़ाया जा सकता है।

साक्षरता संवर्धन की बात प्रौढ़ पाठशालाओं से आरंभ होती है पर इतने पर ही उसका विराम या अन्त नहीं समझ लेना चाहिए। शिक्षा का वास्तविक तात्पर्य है भ्रान्तियों से उबरकर मानवी गरिमा के अनुरूप राजमार्ग अपनाना। इसलिए साक्षरता के साथ एवं उसके उपरान्त लोकमानस के परिष्कार का क्रम चल पड़ना चाहिए। सत्प्रवृत्ति संवर्धन को प्रोत्साहन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मिलना चाहिए। इसी उपक्रम को विचार क्रांति, ज्ञानयज्ञ, प्रज्ञा अभियान जैसे नाम दिए गए हैं।

इस आवश्यकता की पूर्ति के लिए युगधर्म से अवगत एवं अनुप्राणित करने वाला साहित्य सृजा और पढ़ासुना जाना चाहिए। झोला पुस्तकालय योजना को भी साक्षरता संवर्द्धन का अविच्छिन्न अंग मानकर चलना चाहिए अन्यथा इस प्रयोजन के लिए विचार गोष्ठियों, प्रज्ञा आयोजनों, लोक शिक्षण के समारोह आयोजनों को भी सम्मिलित किया जाना है। स्वाध्याय और सत्संग की संयुक्त प्रक्रिया ही वाणी और लेखनी के माध्यम से विचार परिष्कार की प्रक्रिया सम्पन्न करती है। इसलिए शिक्षा संवर्धन की आवश्यक व्यवस्था के साथ साथ युगचेतना उत्पन्न करने वाली स्वाध्याय, सत्संग पर आधारित—लोकमानस परिष्कार का समग्र प्रयत्न परिपूर्ण उत्साह के साथ अग्रगामी बनाना चाहिए।

दूसरा कदम स्वास्थ्य संवर्धन का है। इसके लिए बौद्धिक और क्रिया परक उभयपक्षीय कार्यक्रम अपनाने होंगे। अनगढ़ आदतों में आलस्य प्रमाद भरा रहता है। गंदगी से लेकर चटोरेपन और दुर्व्यसनों तक की अनेकानेक अवांछनीयताएँ स्वभाव का अंग बन जाती हैं। कुप्रचलनों से भी लोग प्रभावित होते हैं और अन्धी भेड़ों की तरह स्वास्थ्यघातक प्रचलनों को अपनाते चले जाते हैं। प्रवाह को उलटने के लिए आवश्यक है कि स्वास्थ्य शिक्षा का ककहरा लोगों को नये सिरे से पढ़ाया जाय। जो कुछ सीखा अपनाया है उसमें से अधिकांश को भुलाने छोड़ने के लिए सहमत किया जाय।

आहार–विहार में प्रकृति–प्रेरणा का समावेश करने की बात पर विचार किया जाता है तो प्रतीत होता है कि आहार के चयन, पकाने के ढंग एवं खाने के तरीके में इन दिनों कुप्रचलनों को देखते हुए क्रान्तिकारी परिवर्तन करने की आवश्यकता है। चटोरेपन और दुर्व्यसनों से ग्रसित होकर लोग किस तरह अपने पैरों कुल्हाड़ी मारते और अपने हाथों गला घोटते हैं इस अवाँछनीयता से जन जन को इस प्रकार अवगत कराया जाय जैसे जंगली तोते को 'सीताराम' रटाने का अभ्यास कराया जाता है। आदतों को बदलना

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कितना कठिन होता है इसे सभी जानते हैं। इसलिए स्वास्थ्य संबंधी अनाचारों के दुष्परिणामों को समझने—समझाने के लिए उग्र आंदोलन की आवश्यकता है। इस सन्दर्भ में नशा, चटोरपन जैसे कुप्रचलनों का घनघोर विरोध करना होगा साथ ही यह सिखाना कर दिखाना होगा कि शरीर को स्वस्थ रखने के लिए किस प्रकार की सुव्यवस्था का लाभ मिलना चाहिए। इस सन्दर्भ में उस अस्वच्छता के विरुद्ध कड़ी मुहिम खड़ी करनी होगी जो सर्वत्र सड़ती नालियों और मल-मूत्र के व्यतिक्रम के रूप में देहातों से लेकर शहरों तक में पूरे उफान पर है। सीलन और घुटन भरे मकानों में रहने के स्थान पर लोगों की रुचि बदलनी होगी कि वे सूर्य और हवा के सम्पर्क में रहने का निश्चय करें। भले ही इसके लिए उन्हें फूस के झोंपड़ों में या पेड़ों की छांया में ही क्यों न रहना पड़े। पशुपालन अच्छी बात है पर इसका अर्थ यह नहीं कि एक ही कोठे में दोनों रहें और गंदगी को दूनी-चौगुनी बढ़ाकर परिवार का स्वस्थ्य गँवायें। आजीविका का लालच ऐसा नहीं होना चाहिए जो रुग्णता और अकालमृत्यु अपनाने के लिए विवश करे। आज हरे-कच्चे आहार की ओर लोकरुचि मोड़ने की आवश्यकता है और पकाने में भाप से उबालने भर को मान्यता देने की आवश्यकता है। भूनने-तलने की प्रथा का अन्त होना चाहिए।

स्वास्थ्य संरक्षण की दृष्टि से यौनाचार की स्वच्छंदता पर प्राचीन काल जैसी ब्रह्मचर्य वर्जनाओं का अंकुश लगाना चाहिए। बहुप्रजनन के सर्वतोमुखी संकट का एक बड़ा पक्ष स्वास्थ्य की बर्बादी भी है। प्रसवभार से जन्मदात्री जर्जर हो जाती है। साधनों के अभाव में बालकों की स्थिति दयनीय रहती है। कमाने वालों की कमर टूटती है और समूचे समाज के सामने असंख्य संकट खड़े होते हैं। इन तथ्यों को यदि लोकमानस में उतारा जा सके तो स्वास्थ्य संकट की आधी समस्या का समाधान मिल सकता है।

शरीर संरचना, आहार स्वच्छता, रोगी परिचर्या प्राथमिक चिकित्सा नियमितता, प्रजननकर्म जैसे कितने ही ऐसे प्रसंग हैं जिनके संबंध में शिक्षित और अशिक्षित, धनी और निर्धन, शहरी और देहाती समान रूप से भ्रम—

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ग्रस्त एवं कुप्रचलनों से संत्रस्त हैं। आवश्यकता इस बात की है कि साक्षरता अभियान की तरह आरोग्य-रक्षा के लिए भी सशक्त जन आन्दोलन चलाया जाय। उपेक्षा वरतने के दुष्परिणाम, अनुशासन पालने के उत्साहवर्धक लाभ समझाते हुए ऐसी रीति–नीति का प्रत्यक्ष प्रचलन किया जाय जिसे देखकर अभीष्ट परिशोधन–परिष्कार के लिए उत्साह उमँगे। आदतों को बदलने में भी कुरीतियों और अनीतियों को उखाड़ने की तरह ही जोर लगाने की आवश्यकता पड़ती है। यह है स्वास्थ्य संरक्षण का बौद्धिक–प्रथम पक्ष।

इस सन्दर्भ में दूसरा उपाय है व्यायाम, आसन, प्राणायाम, खेलकूद, ड्रिल, लाठी चलाने जैसे उपक्रमों को प्रोत्साहन। फर्स्ट एड, परिचर्या, सामूहिक श्रमदान से सार्वजनिक स्वच्छता के कार्यक्रम भी इसी प्रयास के अन्तर्गत आते हैं। हर गाँव में ऐसे स्वास्थ्य केन्द्र स्थापित होने चाहिए जिनमें बौद्धिक और क्रियात्मक दोनों ही प्रकार की गतिविधियाँ समान रूप से अपनाई जाती हों। प्राचीनकाल में अखाड़े इसी प्रयोजन की पूर्ति करते थे। समर्थगुरु रामदास ने अपने प्रभाव क्षेत्र में महावीर मन्दिरों की स्थापना की थी और उनमें से प्रत्येक के साथ शिक्षा संवर्धन के लिए विद्यालय एवं सत्संगों का क्रम जोड़ा था। इसी प्रकार उनमें व्यायामशालाएँ एवं शास्त्रशिक्षा का प्रबन्ध था। यही कारण हैकि पाठशालाओं और व्यायामशालाओं से जुड़े हुए महावीर मन्दिर शिवाजी के नेतृत्व में चलते रहे स्वतंत्रता संग्राम में धन-जनका उत्साहवर्धक योगदान करते रहे। ऐसे ही प्रयत्न गुरुगोविन्दसिंह के नेतृत्व में भी चले थे।

प्रत्येक प्रज्ञा संस्थान अपने लोकमंगल कार्यक्रमों में शिक्षा संवर्धन और स्वास्थ्य संरक्षण को अविच्छिन्न रूप से जुड़ा रखे और जहाँ, जिस प्रकार जो विधि व्यवस्था बन सके उसे बनाने में कोर कसर न रखे। उदारमना दूरदर्शी जनसमुदाय से भी यह आग्रह किया गया है कि वे इन दोनों प्रयासों को सफल बनाने में पूरा–पूरा योगदान करें। समय की यह महती माँग है। देखने में छोटे प्रतीत होते हुए भी यह प्रयास ऐसे हैं जिनके सहारे अवांछनीयताओं का उन्मूलन और सत्परम्पराओं का प्रचलन सुनिश्चित

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

रूप से संभव हो सकेगा। विभीषिकाओं से निपटने और सुसंभावनाओं को प्रत्यक्ष करने के लिए इन चिरस्थायी उपायों को अपनाये बिना और कोई रास्ता नहीं। सामयिक उपचार तो फुलझड़ी चमकाने की तरह कौतूहल कौतुक मात्र उत्पन्न करते हैं।

छोटे शुभारंभ के रूप में हर जगह यह होना चाहिए कि स्कूली बच्चों के अवकाश के घण्टों में संस्कार पाठशाला चलाई जाय। जिसमें स्कूली पढ़ाई का होमवर्क कुशल अध्यापकों की देखरेख में होता रहे। साथ ही व्यक्तित्व निर्माण की नैतिक, सामाजिक शिक्षा का भी समावेश रहे। इसके अतिरिक्त छात्रों को व्यायाम, खेलकूद, आसन, प्राणायाम ड्रिलस्काउटिंग फर्स्ट एड आदि का भी अभ्यास कराया जाता रहे। इसमें शिक्षा और स्वास्थ्य संवर्धन के दोनों पक्षों का सरल समावेश है। यह योजना कहीं भी, कुछेक उत्साहीजनों के प्रयास से सहज ही आरंभ हो सकती है। इस प्रक्रिया को अधिकाधिक विकसित करने की—नर-नारियों के विभिन्नवर्गों के लिए विभिन्न कार्यक्रम बनाने और चलाने की पूरी—पूरी गुंजायश है।

अपना समय, समस्याओं, विभीषिकाओं और चुनौतियों से भरा है। इस अवसर पर जागृत आत्माओं को अपना योगदान सामयिक समाधान के लिए नियोजित करना ही चाहिए। जो इस दिशा में रुचि लें उन्हें प्रमुखता शिक्षा संवर्धन और स्वास्थ्य संरक्षण को देना चाहिए।

क्र०/१५३ प्र०-युग निर्माण योजना, मु०-युग निर्माण प्रेस मथुरा। मूल्य ४० पैसे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org